वर्ष-1, अंक-5, अक्टूबर 2017
जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)

किलोल

आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

इस महीने में ढ़ेरों त्योहार हैं. बुराई पर अच्छाई की विजय का त्योहार दीवाली भी इसी माह है. किलोल के इस अंक में हमने दीवाली से संबंधित कुछ सामग्री देने का प्रयास किया है. हमेशा की तरह यह अंक भी http://www.alokshukla.com पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. मुझे सूचना मिली है कि शिक्षक साथी किलोल को मोबाइल पर डाउनलोड करके बच्चों को दिखा रहे हैं. सूचना प्रौद्योगिकी यह बड़ा अच्छा उपयोग है. आप चाहें तो पत्रिका को प्रिंट करके भी अपनी शाला के बच्चों को पढ़ने को दे सकते हैं. इस अंक के लिये हमें बड़ी अच्छी कहानियां मिली हैं और एक बड़ी अच्छी पेंटिंग भी मिली है. मुझे आशा है कि आप आगे और भी अच्छी बालोपयोगी सामग्री पत्रिका में प्रकाशन के लिये भेजेंगे. अपनी रचनाएं आप dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेज सकते हैं। सभी नन्हे साथियों को प्यार और दीवाली की शुभकामनाएं.

आलोक शुक्ला

बोलने वाली मांद

किसी जंगल में एक शेर रहता था. एक बार वह दिन-भर भटकता रहा, किंतु भोजन के लिए कोई जानवर नहीं मिला. थककर वह एक गुफा के अंदर आकर बैठ गया. उसने सोचा कि रात में कोई न कोई जानवर इसमें अवश्य आएगा. आज उसे ही मारकर मैं अपनी भूख शांत करुँगा.

उस गुफा का मालिक एक सियार था. वह रात में लौटकर अपनी गुफा पर आया. उसने गुफा के अंदर जाते हुए शेर के पैरों के निशान देखे. उसने ध्यान से देखा. उसने अनुमान लगाया कि शेर अंदर तो गया, परंतु अंदर से बाहर नहीं आया है. वह समझ गया कि उसकी गुफा में कोई शेर छिपा बैठा है.

चतुर सियार ने तुरंत एक उपाय सोचा. वह गुफा के भीतर नहीं गया. उसने व्दार से आवाज लगाई-

‘ओ मेरी गुफा, तुम चुप क्यों हो? आज बोलती क्यों नहीं हो? जब भी मैं बाहर से आता हूँ, तुम मुझे बुलाती हो. आज तुम बोलती क्यों नहीं हो?’

गुफा में बैठे हुए शेर ने सोचा, ऐसा संभव है कि गुफा प्रतिदिन आवाज देकर सियार को बुलाती हो. आज यह मेरे भय के कारण मौन है. इसलिए आज मैं ही इसे आवाज देकर अंदर बुलाता हूँ. ऐसा सोचकर शेर ने अंदर से आवाज लगाई और कहा-

‘आ जाओ मित्र, अंदर आ जाओ.’

आवाज सुनते ही सियार समझ गया कि अंदर शेर बैठा है. वह तुरंत वहाँ से भाग गया. और इस तरह सियार ने चालाकी से अपनी जान बचा ली.

बिन बरसे

लेखक - द्रोण साहू

बिन बरसे मत जाना बादल,
हमको मत तरसाना बादल।

देखो धरती बैठी सूखी,
मानो तेरे प्यार की भूखी,
आकर प्यार बरसाना बादल।

मुँह फुलाए खड़ा पलाश,
घास का चेहरा भी उदास,
आकर इन्हें मनाना बादल।

बिन पानी के धान भी रोया,
रोते-रोते प्यासा सोया,
गीत बूँद के गाना बादल।

कब आए तू थप-थप-थप-थप,
बिन तेरे तो तड़प गए सब,
और न अब तरसाना बादल।

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने यह चित्र दिया था, जिसपर अनेक कहानियां हमारे पास आयी हैं. इनमें से 3 कहानियां हम यहां दे रहे हैं.

पिछले अंक का चित्र

कहानी-1

सहानुभूति

लेखक - दिलकेश मधुकर

सर्दी का सुहाना मौसम था. मीना अपने दादा जी के साथ सुबह की सैर के लिए गई. रास्ते में वह सुस्ताने के लिए एक पत्थर पर बैठ गई. उसी समय एक काला कौआ सामने आकर बैठ गया. मीना ने सोचा कि बेचारा कौआ ठंड से कितना कांप रहा होगा. मैंने तो स्वेटर पहना है, इसलिए मुझे ठंड नहीं लग रही है. पर कौए ने कुछ नहीं पहना है. कौआ की दशा देखकर मीना का मन भर आया.

उधर कौए ने सोचा कि बेचारी लड़की सर्दी से कांप रही होगी. मेरे पास तो पंख हैं जिससे मुझे ठंड नहीं लगती. बेचारी लड़की के तो पंख नहीं हैं. कौआ लड़की की दशा को देखकर चिंतिंत हो गया. दोनों ही एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति प्रकट करने लगे, और परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु कोई चमत्कार करो.

थोड़ी देर में धूप तेज हो गयी. अब गर्मी लगने लगी. दोनों परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए अपने अपने घर चले गए.

कहानी-2

चारुलता और कौए की दोस्ती

लेखक - डोमेन कुमार बढ़ई

चारुलता उदास बैठी थी. तभी उसके पास एक कौआ आया. उसने चारुलता से पूछा कि वह क्यों उदास है? चारुलता कौए से निराशा भरे स्वर मे बोली - "मै बिल्कुल अकेली हूँ. मुझे भूख भी लग रही है. मेरे मम्मी-पापा की एक कार एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई. मेरी सहायता करने वाला कोई नहीं है."

कौए ने चारुलता को दिलासा देते हुए कहा – "फिक्र मत करो. आज से तुम मेरी दोस्त हो. जो रोटी मैं अपने खाने के लिए लोगों के घरों से लाता हूँ, उसमें से आधी मैं तुम्हें दे दिया करूँगा. इस प्रकार तुम्हारी भी भूख मिट जाएगी. कौए की प्यार भरी बातें सुनकर चारुलता के चहरे पर मीठी सी मुस्कान आ गयी.

कहानी-3

पूर्वजों का प्रतीक कौआ

लेखक - राम नारायण प्रधान

छाया बिटिया चिड़िया, गाय, बैल , कुत्ता आदि सभी से बहुत प्यार करती है. अपने नाश्ते से रोटी, चावल आदि बचाकर हमेशा गाय बैल व कुत्ते को खिलाती है. चिड़ियों के लिये छत पर रोज चावल और गेहूं के दाने डाल आती है. पितृपक्ष चल रहा था. उसके दादा जी ने बतलाया - "बिटिया इस पक्ष मे हम तुरोइ की पत्ती में भीगा दाल और चावल लेकर तालाब जाते हैं और अपने पूर्वजों को घर आने के लिए आमंत्रित करते हैं. फिर घर के आँगन को लीप-बुहार कर फूलों से सजाते हैं. कंडे की आग में घी और गुड़ का अर्पण कर प्रणाम करते है. बिना नमक का दाल का बड़ा, चावल और दाल को तुरोइ की पत्ती में डालकर भोजन परोसते हैं, और गाय, कुत्ता, चिड़िया आदि को भोजन देते है."

छाया छत पर कौए को बड़ा और चावल देने बैठी थी तभी एक बूढ़ा कौआ आकर बैठा और बोला - "बेटी तुम बहुत अच्छी लड़की हो. मै तुम्हारी सेवा से बहुत खुश हूँ." छाया ने पूछा - "आप कौन हैं?" कौआ बोला - "मै तुम्हारा परदादा हूँ. तुम बहुत दयालु बच्ची हो. तुम्हारी दयालुता की बात सुन कर मै स्वयं तुम्हें देखने आया हूँ. तुम सदा सुखी रहो. परिवार के सब लोग सुखी रहें." ऐसा आशीर्वाद देकर वह कौआ एक बड़ी सी रोटी उठा कर चला गया. जब यह बात छाया ने दादा जी को बताई तो दादा जी बहुत खुश हुए और बोले - "जीव जंतुओं पर दया करना चाहिए. हम मनुष्य फसलों पर जो कीट नाशक दवाएं डाल रहे हैं, उनके दुष्प्रभाव से चिड़ियां अकाल मौत मर रही हैं और हम स्वयं भी बीमार हो रहे है. हमें सावधानी बरतनी होगी और कीटनाशकों का उपयोग कम करना होगा, तभी सब जीव सुरक्षित रहेंगें."

अगले अंक के लिये चित्र

यहां पर हम दीप्ति दीक्षित जी की बनाई हुई एक पेंटिंग प्रकाशित कर रहे हैं. इसे देखकर एक अच्छी सी कहानी लिखिये और हमें भेज दीजिये - dr.alokshukla@gmail.com पर. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

दीवाली पर अमरीका और कनाडा के डाक टिकट

यह तो हम सभी जानते हैं कि दीवाली भारत का बड़ा त्योहार है. इस दिन हम सारे घर में दिये जलाकर रोशनी करते हैं, मिठाइयां खाते हें और पटाखे भी फोड़ते हैं. आज भारत के लोग पूरी दुनिया में रहते हैं. भारतीयों ने अपनी मेहनत और लगन से पूरी दुनिया में इज़्ज़त कमाई है. इसीलिये दुनिया के लगभग सभी देशों में भारत के त्योहार मनाएं जाते हैं. पिछले वर्ष अमरीका ने भारत की दीवाली के लिये एक बड़ा सुंदर डाक टिकट जारी किया था. इस डाक टिकट का चित्र नीचे दिया गया है -

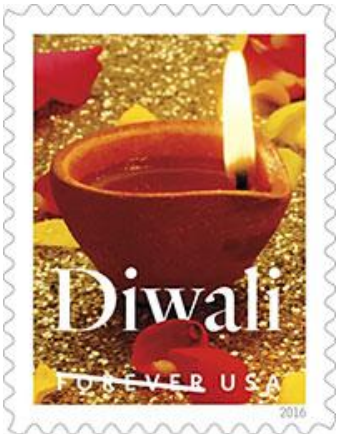

इस साल दीपाली के उपलक्ष्य में भारत और कनाडा ने अपनी दोस्ती निभाते हुए एक साझा डाक टिकट जारी किया है. भारत और कनाडा के डाक टिकटों में मामूली सा अंतर है. दोनो डाक टिकटों के चित्र नीचे दिये गये हैं -

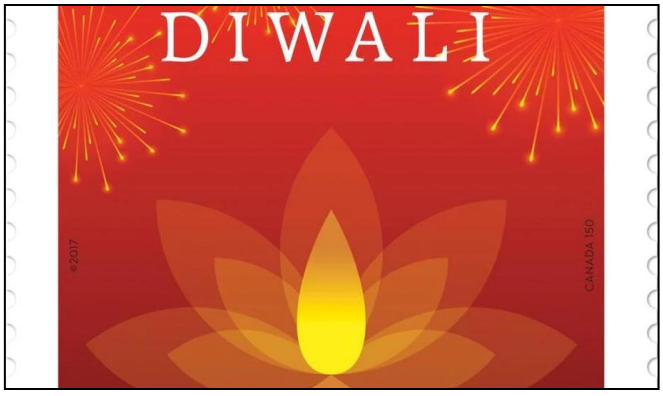

दीवाली पर सुंदर लैंप बनाएं

दीवाली पर घर को सजाने के लिये हम सुंदर-सुंदर लैंप बाज़ार से खरीदकर लाते हैं. आओं आज हम तुम्हें घर पर ही लैंप बनाना सिखाएं. इसके लिये तुम्हें आवश्यकता होगी पानी की पुरानी प्लास्टिक की बोतलों, सफेद रंग के मोटे कागज़, सेलो टेप, एक कागज़ काटने के चाकू और एल.ई.डी. लाइट की.

सबसे पहले कागज़ पर फूल-पत्तियों के सुंदर डिज़ाइन बना लो. फिर कागज़ काटने के चाकू से इस डिज़ाइन को इस नीचे दिये गए चित्र के अनुसार काटकर, उसमें बने हुए फूलों और पत्तियों को थोड़ा सा उठा दो.

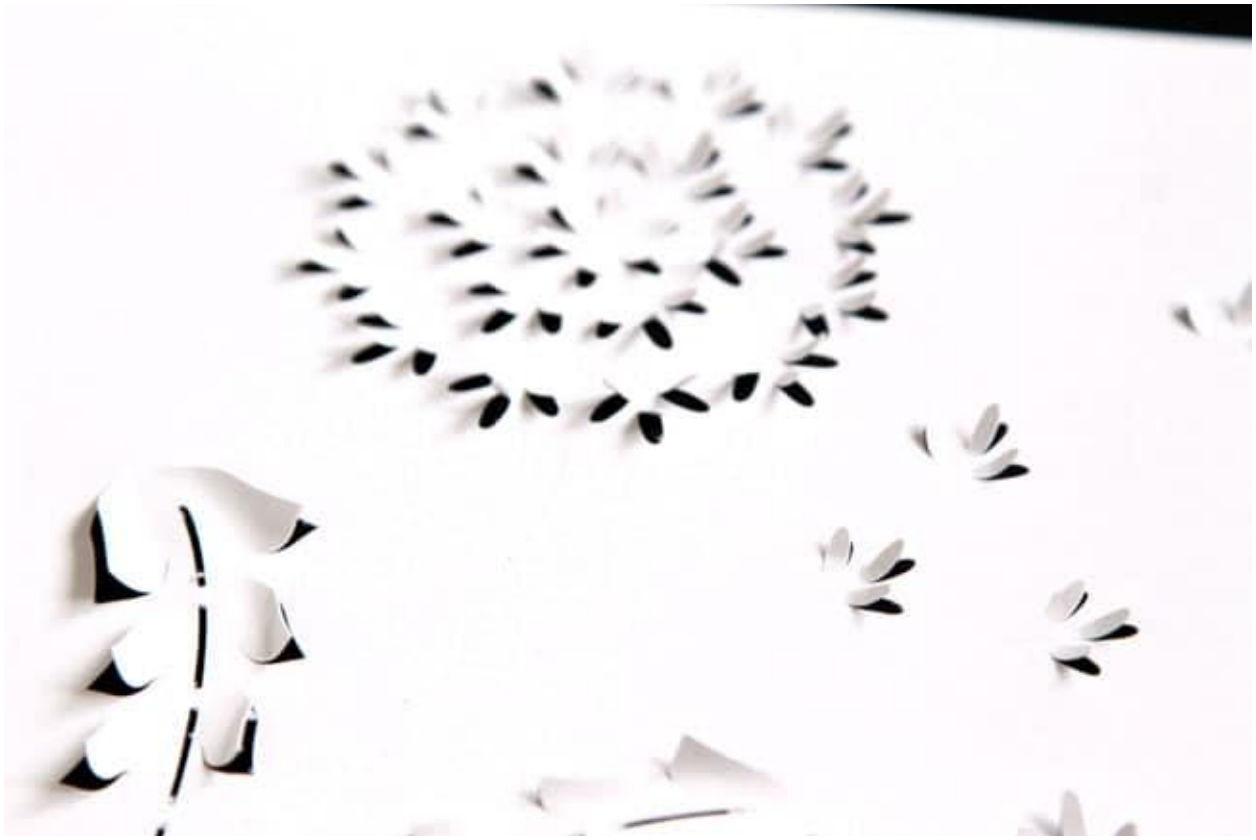

इसके बाद इस कागज़ को मोड़कर एक ट्यूब जैसा बना लो और उसे सेलो टेप से चिपका लो. पाली की प्तास्टिक की एक बोतल को काटकर इस कागज़ के ट्यूब के

अंदर रख दो. अब एल.ई.डी. लाइट को इस पानी की बोतल के अंदर रखकर जला दो. लैंप को अंधेरे स्थान पर रखकर देखो - कितना सुंदर लगता है.

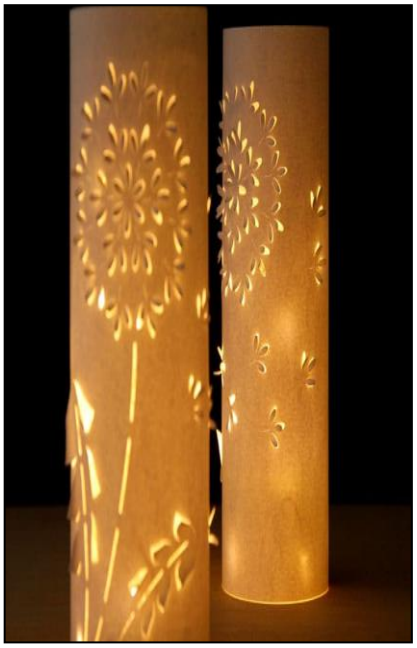

आओ हंस लें

कमाल के दिन थे वो भी
मैडम मुर्गा हमे
बनाती थी और
और परीक्षा मे
अंडे खुद देती थी

गुंडा -चल "हफ्ता"
निकाल
दुकानदार- "कैलेंडर
फाड़ते हुए" ले भाई पूरा
"महीना" ही रख ले

पापा मैं फिर से
फेल हो गया!
चिंता मत करो
तुम शेर के बेटे हो!
हां, पिता जी!
मैडम भी यही
कहती है!
कि तुम शेर
के बेटे हो?
कुछ ऐसा ही! कह रही थी,
पता नहीं तु किस जानवर की औलाद है!

घर की सुख शांति के लिए कौन सा व्रत रखूं?
मौन व्रत।

पहेलियां

1. चिंकी के पिता के 5 बच्चे हैं - नाना, नैनी नीनो, नोनोए तो बताओं पांचवे बच्चे का नाम क्या है?

2. ऐसी क्या चीज़ है जो सिर्फ बोलने से ही टूट जाती है?

3. अगर आप एक अंधेरे कमरे में एक लालटेन, एक मोमबत्ती और एक दिये के साथ हैं तो आप सकसे पहले क्या जलायेंगे?

4. वह क्या है जिसमें चार उंगलियां और एक अंगूठा है पर उसमे जान नहीं है?

5. वह क्या है जिसमें बहुत सारे छेद हैं पर उसमें पानी रुका रहता है?

उत्तर - 1. चिंकी 2. - खामोशी 3. माचिस 4. दस्ताना 5. स्पंज

Old MacDonald

Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O
And on his farm he had a cow, E-I-E-I-O
With a "moo-moo" here and a "moo-moo" there
Here a "moo" there a "moo"
Everywhere a "moo-moo"
Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O

Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O
And on his farm he had a horse, E-I-E-I-O
With a "neigh, neigh" here and a "neigh, neigh" there
Here a "neigh" there a "neigh"
Everywhere a "neigh, neigh"
Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O

Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O
And on his farm he had a chicken, E-I-E-I-O
With a "cluck, cluck" here and a "cluck, cluck" there
Here a "cluck" there a "cluck"
Everywhere a "cluck, cluck"
Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O

Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O
And on his farm he had a duck, E-I-E-I-O
With a "quack, quack" here and a "quack, quack" there
Here a "quack" there a "quack"
Everywhere a "quack, quack"
Old Macdonald had a farm, E-I-E-I-O

<u>विज्ञान के प्रयोग - हवा स्थान घेरती है</u>

यह प्रयोग तुम अपने किसी शिक्षक अथवा घर के बड़े के साथ मिलकर ही करना. इस प्रयोग के लिये तुम्हे आवश्यकता होगी एक प्लेट, एक कांच के ग्लास, एक मोमबत्ती, कुछ रंगीन पानी और गर्म ग्लास को पकड़ने के लिये एक कपड़े की.

सबसे पहले एक प्लेट में एक मोमबत्ती खड़ी कर लो और फिर प्लेट में थोड़ा सा रंगीन पानी भर लो. अब मोमबत्ती को जला लो. इसके बाद एक कपड़े से पकड़कर कांच के ग्लास को उल्टा करके मोमबत्ती को इस प्रकार ढ़क दो कि ग्लास का खुला वाला भाग पानी में डूबा रहे. कुछ देर में मोमबत्ती बुझ जाती है और रंगीन पानी ग्लास में ऊपर चढ़ जाता है.

बताओ -

1. मोमबत्ती कुछ समय बाद क्यों बुझ गई?
2. पानी ग्लास में क्यों चढ़ गया?

तुम जानते हो कि जलने के लिये आक्सीजन गैस की आवश्यकता होती है और जलने पर आक्सीजन गैस कार्बन-डाई-आक्साइड में परिवर्तित हो जाती है जो जलने में सहायता नहीं करती. हवा में लगभग 20.95 प्रतिशत आक्सीजन होती है. क्योंकि ग्लास का खुला भाग पानी के नीचे है इसलिये उसमे ताजा हवा प्रवेश नहीं कर सकती. जब तक ग्लास के अंदर की हवा में आक्सीजन बची रहती है, तब तक मोमबत्ती जलती है और जब ग्लास के अंदर की हवा से सारी आक्सीजन, काबर्न-डाई-आक्साइड में बदल जाती है, तो मोमबत्ती बुझ जाती है.

क्योंकि कार्बन-डाई-आक्साइड का आयतन आक्सीजन की तुलना में कम होता है इसलिये ग्लास के अंदर आंशिक वैक्यूम बन जाता है, जिसके कारण प्लेट से पानी ग्लास में चढ़ जाता है.

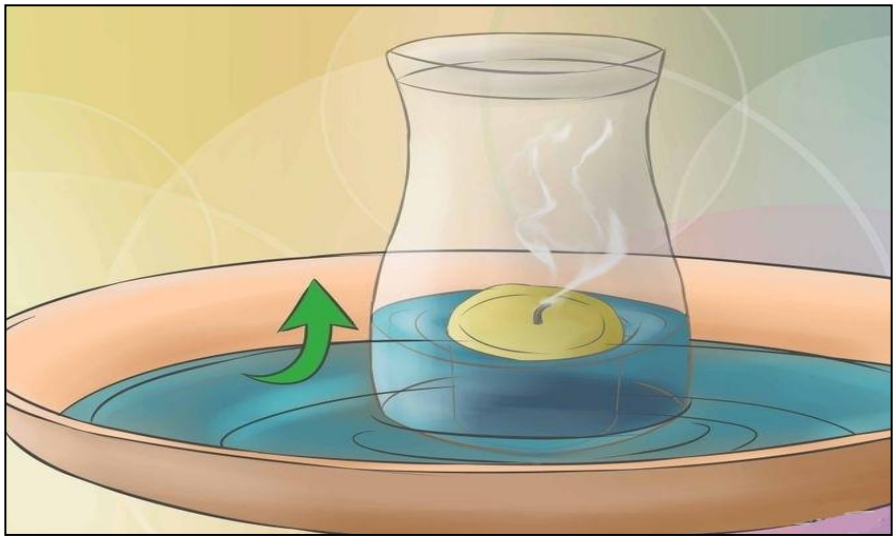

वर्ग पहेली

इस बार की वर्ग पहेली में रामायण के चरित्रों के नाम हैं. देखो तुम इनमे से कितने नाम जानते हो.

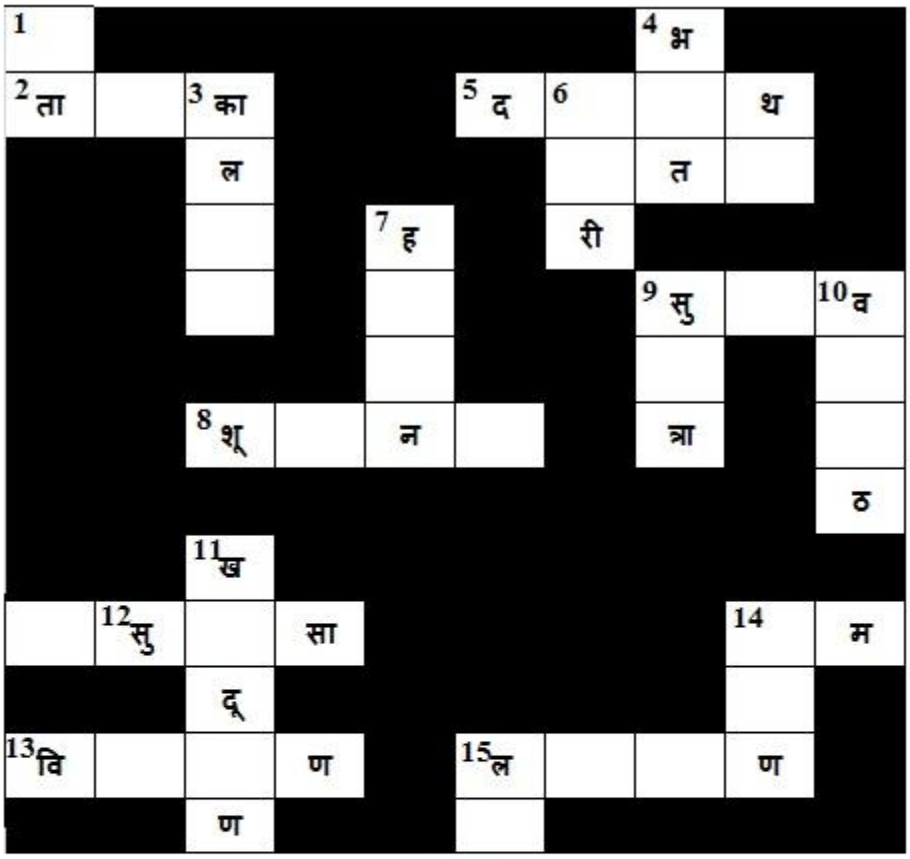

उत्तर

ऊपर से नीचे - 1. सीता, 3. कालनेमि, 4. भरत, 6. शबरी, 7. हनुमान, 9. सुमित्रा, 10. वशिष्ठ, 11. खरदूषण 14. रावण, 15. लव

दायें से बायें - 2. ताड़का, 5. दशरथ, 8. शूर्पणखा, 9. सुग्रीव, 12. सुरसा, 13. विभीषण, 14. राम, 15. लंकिणी